

## सिक्किम में हिंदी

सुवास दीपक

पूर्वोत्तर परिषद् का आठवाँ राज्य सिक्किम सांप्रदायिक एकता एवं सांस्कृतिक सौहार्द का एक जीता-जागता उदाहरण है। 1975ई. तक सिक्किम भारत का एक संरक्षित अधिराज्य था। 16 मई, 1975ई. को सिक्किम भारतीय गणराज्य का 22वाँ राज्य बना। 7096 वर्गमील में फैले और 5,40,857 की आबादी के इस छोटे से राज्य में 12 भाषाओं को सरकारी मान्यता प्राप्त है। अमन-चैन और भाईचारे की मिसाल बन चुके इस राज्य के इतिहास में कभी भाषा या धर्म को लेकर पारस्परिक तनाव उत्पन्न हुआ हो, इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलता। पारस्परिक एकता इसका ज्वलंत उदाहरण है।

विलय से पूर्व सिक्किम के स्कूलों में हिंदी को एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता रहा है। 1925ई. तक सिक्किम में केवल एक सरकारी हाई स्कूल था, वह भी राजधानी गंगटोक में। इससे पहले ईसाई मिशनरियों के द्वारा स्थापित स्कूलों में हिंदी के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी। मिशनरियों का मुख्य उद्देश्य धर्म प्रचार होने के बावजूद इस समूचे पर्वतीय क्षेत्र में (उस समय सिक्किम का क्षेत्रफल काफी विस्तृत था, जिसमें आज का समूचा दार्जिलिंग जिला शामिल था और उसकी सीमाएँ कूचविहार और पश्चिम में मेची नदी तक फैली हुई थीं) शिक्षा के प्रचार-प्रसार में इन ईसाई मिशनरियों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों तक शिक्षा का माध्यम हिंदी रहा। सिक्किम और दार्जिलिंग में स्थापित स्कूलों में बाद में बिहार और उत्तर प्रदेश से हिंदी शिक्षक नियुक्त किए जाते थे। चूँकि वे स्थानीय भाषाएँ नहीं जानते थे, इसलिए जनजातीय और नेपाली भाषी विद्यार्थियों को वर्णमाला सिखाते ह्रस्व व दीर्घ की मात्रा को 'छोटा इ', 'छोटा उ', 'बड़ा ऊ', श. स ष के उच्चारण को ध्वनि के स्थान पर 'तालव्य', 'मूर्धन्य' और 'दन्त्य' कहकर सिखाते थे जिनका उच्चारण कालान्तर में केवल 'स' (दन्त्य स) ही रह गया। 'न' और 'ण' के उच्चारण के साथ भी ऐसा ही हुआ। केवल 'न' ही रह गया। इसका प्रभाव अद्यावधि देखा जा सकता है।

सिक्किम की आबादी में पिछले डेढ़ सौ वर्षों में नेपालीभाषियों की बहुतायत रही है। नेपाली भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में सिक्किम की राजधानी गंगटोक के इकलौते हाई स्कूल में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी भी एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती रही। 1925ई. से 1950ई. तक तीसरी भाषा के रूप में। पहली अंग्रेजी, दूसरी नेपाली और तीसरी हिंदी।

भारत में विलय के पूर्व सिक्किम में भारत सरकार के राजनीतिक अधिकारी का कार्यालय था। उसने छठे दशक में एक अध्ययन केन्द्र की स्थापना की थी जिसमें नेपाली, भुटिया, लेप्चा भाषाओं के साथ-साथ हिंदी में कविता पाठ का आयोजन किया जाता था।

गांधी शताब्दी समारोह (1969 ई.) के अवसर पर तत्कालीन सिक्किम सरकार ने गांधी दर्शन पर अखिल सिक्किम निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया था जिसमें नेपाली, भुटिया, लेप्चा, लिम्बू भाषाओं के साथ-साथ हिंदी में भी निबन्ध आमन्त्रित किए गए थे।

1975ई. से पूर्व प्रकाशन विभाग, भारत सरकार से सिक्किम के पुस्तकालयों और स्कूलों के लिए बड़ी संख्या में विभाग के प्रकाशन, विशेष तौर पर हिंदी साहित्य तथा भारत की स्वतंत्रता के इतिहास सम्बन्धी पत्र-पत्रिकाएँ व पुस्तकें वितरित की जाती थीं।

1950ई. में सिक्किम भारत-भारत मैत्री संधि हुई जिससे भारत सरकार ने सिक्किम के योजनाबद्ध विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाओं की व्यवस्था की। सिक्किम में तब से शिक्षा विकास की सुदृढ़ नींव रखी गई। दसवीं तक पश्चिम बंगाल बोर्ड के अधीन हिंदी की पढ़ाई की व्यवस्था थी परन्तु सी.बी.एस.ई. (सेंट्रल बोर्ड आफ सेकेंडरी एडुकेशन) प्रणाली लागू होने पर हिंदी विषय को ऐच्छिक बना दिया गया जो अध्यावधि कायम है।

सिक्किम के स्कूलों में बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा आदि से आए व्यापारियों, जो स्थायी रूप से सिक्किम में बस गए हैं, के बच्चे स्कूलों में हिंदी विषय लेते ही हैं, अभी धीरे-धीरे जनजातियों और नेपाली भाषी विद्यार्थी भी हिंदी में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए आगे आ रहे हैं। वर्तमान में सिक्किम के स्कूलों में 8-9 ऐसे अहिंदी भाषी शिक्षक हैं जिन्होंने हिंदी में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। सिक्किम केंद्रीय विश्वविद्यालय में हिंदी में उच्च शिक्षा की व्यवस्था है जिसमें अहिंदी भाषी स्थानीय छात्र हिंदी में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। हिंदी विभाग में प्राध्यापक डॉ. छुकी भुटिया स्थानीय जनजाति समुदाय से हिंदी में पीएच.डी. करने वाली प्रथम महिला हैं।

हिंदी के प्रति झुकाव का एक प्रमुख कारण है नागरीलिपि जिससे यहाँ की शत-प्रतिशत जनता परिचित है। बहुसंख्यक नेपाली भाषी लोगों और हिंदीभाषी लोगों में भाषिक संस्कृति की समानता के कारण बनारस में संस्कृत पढ़ने के लिए जाने वाले विद्यार्थी हिंदी की स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की परीक्षाएँ देते आ रहे हैं। इसके पीछे आर्थिक कारण भी हैं क्योंकि ऐसे विद्यार्थियों को विभिन्न स्कूलों में जीविका के स्थायी अवसर प्राप्त हो जाते हैं।

1978ई. में सिक्किम का प्रथम महाविद्यालय स्थापित हुआ था जिसमें हिंदी विभाग की स्थापना की गई। उत्तर प्रदेश के लम्बोदर झा महाविद्यालय के प्रथम हिंदी व्याख्याता नियुक्त हुए थे परन्तु 1982-83ई. में विद्यार्थियों की कमी के चलते हिंदी विभाग को समाप्त कर दिया गया था।

1981ई. से स्थापित आकाशवाणी गंगटोक में स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी में कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। सिक्किम स्थित केंद्र सरकार के विभागों एवं उपक्रमों में हिंदी अधिकारी नियुक्त हैं।

गंगटोक स्थित शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से राष्ट्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से हिंदी के विषय विशेषज्ञों के द्वारा स्थानीय शिक्षकों को हिंदी शिक्षण के विशेष प्रशिक्षण की प्रति वर्ष व्यवस्था की जाती है। इसके अतिरिक्त प्रति वर्ष 30 से 50 शिक्षकों को आगरा में हिंदी शिक्षण का प्रशिक्षण दिया जाता है।

सिक्किम के सभी 780 स्कूलों में तृतीय कक्षा से आठवीं कक्षा तक अनिवार्य रूप से हिंदी विषय लेना पड़ता है। नवीं कक्षा से ऐच्छिक।

बीसवीं शताब्दी के पाँचवें दशक तक सिक्किम की राजधानी गंगटोक व कुछ अन्य प्रमुख शहरों में स्थानीय नाटक मण्डलियाँ एवं बिहार और उत्तर प्रदेश से आई रामलीला पार्टियाँ धार्मिक नाटकों द्वारा लोगों का मनोरंजन करती थीं। बिहार के सीताशरण दूबे की रामलीला पार्टी ने 1945ई. से 1980ई. तक सिक्किम के विभिन्न स्थानों पर रामलीला के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार किया।

सिक्किम में हिंदी पत्रकारिता

1987ई. से गंगटोक से श्रीमती संतोष निराश (1928- 2020 ई.) ने 'जमाना सदाबहार' (हिंदी साप्ताहिक) का चार दशकों तक नियमित प्रकाशन/सम्पादन किया है। यह सिक्किम से प्रकाशित इकलौता हिंदी साप्ताहिक है। इसका प्रकाशन अब दिवंगत संतोष की पुत्री नीता निराश कर रही हैं।

दैनिक हिंदी समाचारपत्र

2006ई. से सिक्किम की राजधानी गंगटोक से 'अनुगामिनी' नामक हिंदी दैनिक का प्रकाशन हो रहा है। 2012ई. से गंगटोक से हिंदी दैनिक 'नित्य समय' का प्रकाशन हो रहा था। 2019ई. के जून महीने से इस हिंदी दैनिक का प्रकाशन स्थगित है।

सिलीगुड़ी से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक समाचार पत्रों में स्थानीय अहिंदी भाषी संवाददाता हिंदी में समाचार संकलन कर रहे हैं। इन संवाददाताओं में प्रणय लामिछाने, प्रवीण खालिंग, जोसेफ लेप्चा आदि प्रमुख हैं।

सिक्किम से हिंदी में लिखने वाले कुछेक प्रमुख लेखक/कवि- के.एन. शर्मा, श्याम प्रधान, पदम क्षत्री (अनुवाद भी करते हैं), आशा किरण, शीला दाहाल का योगदान उल्लेखनीय है।

प्रथम हिंदी पुस्तक

सिक्किम से प्रकाशित प्रथम हिंदी पुस्तक है चन्द्रचूड़ नारायण शर्मा 'चिन्तक' की 'जय बांग्ला' (1972ई. में प्रकाशित) है। यह एक खंडकाव्य है जिसमें बंगलादेश के निर्माण से जुड़े घटनाक्रम का उल्लेख किया गया

है। इसके पश्चात् ध्रुव नारायण सिंह की 'बीस बढ़ते कदम'। यह एक गीति नाटक है और इसका प्रकाशन 1976 ई. में शिक्षा विभाग, सिक्किम सरकार ने किया था। 1992ई. में सिक्किम के नेपाली महाकवि तुलसीराम शर्मा 'कश्यप' का हिंदी खण्डकाव्य 'इन्द्रकील' तथा कृपाल सिंह द्वारा लिखित और प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा 1997ई. में प्रकाशित 'सिक्किम संस्कृति और जनजीवन' अब तक की हिंदी में प्रकाशित पुस्तकों की सूची है।

अस्सी के दशक से सिक्किम से हिंदी साहित्य लेखन एवं हिंदी पत्रकारिता का प्रारंभ होता है। सुवास दीपक की हिंदी रचनाएँ 1970ई. के बाद छपनी शुरू हो चुकी थीं उनकी पहली हिंदी रचना 1972ई. को 'सारिका' (टाइम्स आफ इंडिया प्रकाशन से प्रकाशित कहानी मासिक) पत्रिका में छपी थी। कहानी लेखन महाविद्यालय, अम्बाला छावनी की पत्रिका 'शुभ तारिका' (तब केवल 'तारिका') के 1973ई. के एक अंक में उनकी एक लघु कथा 'आवाजों के बीच' भी छपी थी। 1977ई. के 'सारिका' के युवा कथाकार विशेषांक में सुवास दीपक की कहानी 'पड़ोस' प्रकाशित है।

सिक्किम के प्रथम हिंदी उपन्यासकार, कवि और कहानीकार

सिक्किम के प्रथम हिंदी उपन्यासकार, कवि और कहानीकार होने का श्रेय सुवास दीपक को ही जाता है।

सुवास दीपक का संभावना प्रकाशन, हापुड़ से 1985ई. में प्रकाशित 'अरण्य रोदन' सिक्किम का प्रथम हिंदी उपन्यास है। इसके अतिरिक्त 'खुला दरवाजा और पेड़' (1995ई. में प्रकाशित) कविता संग्रह तथा 2004ई. में प्रकाशित कहानी संग्रह 'चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ' सिक्किम से प्रकाशित इन विधाओं की पहली हिंदी पुस्तकें हैं।

राष्ट्र भाषा हिंदी की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर विश्व के दस राष्ट्रों के 293 कवियों का अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी काव्य संकलन (1999 ई.), ध्रुव प्रकाशन, अहमदाबाद में सुवास दीपक की 'एकता और सदभावना का नीर' कविता सम्मिलित है।

इसके अतिरिक्त सुवास दीपक की 'गोरखा शिखर पुरुष श्रृंखला' के अंतर्गत चार हिंदी पुस्तकें-

प्रथम गोरखा स्वाधीनता सेनानी दल बहादुर गिरी (2015 ई.), अमर शहीद दुर्गा मल्ल (2015 ई.). नेताजी सुभाषचंद्र बोस के गायक सिपाही राम सिंह ठकुरी (2016 ई.) और नेपाली साहित्य संस्कृति संगीत के धरोहर मास्टर मित्रसेन थापा (2017 ई.) प्रकाशित हैं।

अनुवाद

भारतीय नेपाली साहित्य की अवधारणा को विस्तार देने वाले लेखकों और अनुवादकों में सुवास दीपक का योगदान उल्लेखनीय और ऐतिहासिक माना जाता है। 1970ई. से नेपाली साहित्य को हिंदी अनुवाद के माध्यम से सर्वप्रथम प्रस्तुत करने का श्रेय सुवास दीपक को जाता है। उन्होंने 1974ई. में 'साहित्य निर्झर'

(चंडीगढ़ से प्रकाशित) के 'भारतीय नेपाली कहानी विशेषांक' का न केवल सम्पादन किया, बल्कि इस विशेषांक की एक दो कहानियों को छोड़कर बाकी कहानियों का हिंदी अनुवाद भी किया। भारतीय नेपाली कहानियों का हिंदी में प्रकाशित यह पहला विशेषांक गिना जाता है।

पटना से प्रकाशित 'प्रस्ताव' पत्रिका के 1981ई. के अंक में 'भारतीय नेपाली कथा खण्ड' में छह भारतीय नेपाली कहानियों के हिंदी अनुवाद प्रकाशित हुए। 'भारतीय नेपाली कहानियां' 1996ई. में सिक्किम के अग्रणी प्रकाशन समूह 'निर्माण प्रकाशन' से प्रकाशित सुवास दीपक द्वारा हिंदी में अनुवादित कहानियों की पुस्तक भारतीय नेपाली कहानियों की प्रथम पुस्तक गिनी जाती है। इसके अतिरिक्त 1996ई. में ही प्रकाशित पवन चामलिङ 'किरण' की नेपाली कविताओं का हिंदी अनुवाद 'कूसीफाइड प्रश्न और अन्य कविताएँ' पुस्तक भारतीय नेपाली कविताओं की हिंदी अनुवाद के रूप में पहली पुस्तक है। कमलेश्वर द्वारा सम्पादित 'शिखर कथा कोश' के प्रथम एव द्वितीय भाग में सुवास दीपक के 35 भारतीय नेपाली कहानियों के हिंदी अनुवाद सम्मिलित किए गए हैं। 2001ई. में नेपाली उपन्यासकार लैनसिंह बाडदेल का चर्चित उपन्यास 'लंगड़ाको साथी' का 'सहयात्री' शीर्षक में, पी. अर्जुन के खण्डकाव्य 'क्रमशः' का 2003ई. में तथा विन्ध्या सुब्बा के साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त उपन्यास 'अथाह' का 2003ई. में हिंदी अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं।

सुवास दीपक की अभी तक नेपाली से हिंदी में अनूदित दर्जनों रचनाएँ विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें प्रमुख पत्रिकाएँ हैं- 'सारिका', 'साप्ताहिक हिंदुस्तान', 'पहल' 'दिनमान' 'समकालीन भारतीय साहित्य', 'भाषा'. आदि प्रमुख हैं।

भारतीय नेपाली लेखकों की कुछ अन्य पुस्तकें भी हिंदी में अनूदित होकर सिक्किम में पिछले वर्षों में प्रकाशित हुई हैं। इनमें प्रमुख हैं- खडगराज गिरी द्वारा हिंदी में अनूदित वीरभद्र कार्कीढोली की दो पुस्तकें 'तुमने जीवन तो दिया लेकिन...' (कविता) और 'शब्दों का कोहरा' कहानी संग्रह।

सुवास दीपक का हिंदी लेखन की ओर झुकाव 1970ई. के शुरुआती सालों में होता है। वह 1968-69ई. में टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा प्रकाशित कथा पत्रिका "सारिका" और "धर्मयुग" से प्रभावित होते हैं। इसी दौरान उनका झुकाव अनुवाद की ओर होता है। भारत के विभिन्न प्रान्तों में फैले लगभग एक करोड़ नेपाली भाषी भारतीय नागरिकों के प्रमुख गढ़ दार्जिलिंग में नेपाली भाषा में साहित्य सृजना की दीर्घ परम्परा रही है। भारतीय नेपाली साहित्य की अवधारणा का सध्येय विस्तार, प्रचार और मान्यता को एक लक्ष्य के रूप में लेकर भारतीय नेपाली साहित्य को राष्ट्रभाषा हिंदी में अनुवाद के माध्यम से परिचित कराने के संकल्प के तहत 1974ई. में चंडीगढ़ से प्रकाशित हिंदी मासिक 'साहित्य निर्झर' के अक्टूबर 1974ई. के अंक के 'भारतीय नेपाली कहानी विशेषांक' का सम्पूर्ण अनुवाद किया। भारतीय नेपाली साहित्य को राष्ट्रभाषा हिंदी के माध्यम से परिचित कराने में इस विशेषांक का ऐतिहासिक महत्व है क्योंकि इस प्रकार का यह नितान्त प्रथम प्रयास था। यह वह समय था जब साहित्य अकादमी ने नेपाली भाषा को मान्यता नहीं दी थी और नेपाली भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में मान्यता भी नहीं मिली थी।

सिक्किम के पहले हिंदी उपन्यासकार होने का श्रेय सुवास दीपक को जाता है। 1985ई. में संभावना प्रकाशन, हापुड़ से प्रकाशित उनका हिंदी उपन्यास 'अरण्य रोदन' चर्चित हुआ है। इस उपन्यास की समीक्षा तत्कालीन हिंदी साप्ताहिक (कलकत्ता से प्रकाशित) 'रविवार' के 1-7 दिस. 1985ई. के अंक में प्रकाशित हुई थी। सकलदीप सिंह ने लिखा-

"आज़ादी के बाद भ्रष्ट व्यवस्था ने इस देश में राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक दिवालियापन की जो विकलांग स्थिति पैदा की उसी की प्रतिक्रिया है सुवास दीपक का यह उपन्यास 'अरण्य रोदन'। भ्रष्ट राजनीति अपनी कुर्सी सुरक्षित रखने के लिए कैसे घिनौने हथकंडे अपनाती है और बेईमान अफसरों और राजनेताओं के संसर्ग में उत्पन्न चमचावाद किस तरह पूरे तन्त्र पर हावी होता जा रहा है यह लेखक ने देश के भावी नागरिकों का निर्माण करने वाली संस्था और उसके कर्णधार शिक्षकों के कार्यकलापों द्वारा अपनी विशिष्ट भाषा और शैली में पाठकों को बताने का दुःसाहस किया है। पारम्परिक उपन्यास से कुछ भिन्न सुवास दीपक के उपन्यास अरण्य रोदन को पढ़ने के बाद ऐसा लगा कि नए लेखक उपन्यास को एक नया ढाँचा देने की कोशिश कर रहे हैं। ... इस छोटे उपन्यास का कैनवास बड़ा नहीं है, समस्याएँ भी जानी पहचानी हैं, उनके निदान के लिए रास्ता ढूँढना भी अरण्य रोदन जैसा ही है, पर अपने चटख शिल्प के द्वारा लेखक बुद्धिजीवियों, शिक्षकों एवं शिक्षितों को एक बार फिर उनके पतन का एहसास कराता है।"

1974ई. में प्रकाशित 'भारतीय नेपाली कहानी विशेषांक' (साहित्य निर्झर) की कहानियों में और कहानियाँ शामिल कर 1966ई. को 'भारतीय नेपाली कहानियाँ' का प्रकाशन निर्माण प्रकाशन द्वारा हुआ, जो पुस्तक के रूप में भारतीय नेपाली कहानियों का नेपाली से हिंदी में अनूदित पहला कहानी संग्रह है। सुवास दीपक द्वारा सिक्किम के स्वनामधन्य कवि- साहित्यकार एवं राजनीतिज्ञ पवन चामलिङ (साहित्यिक नाम पवन चामलिङ 'किरण') की नेपाली कविताओं के हिंदी अनुवाद का संकलन 'क्रूसीफाइड प्रश्न और अन्य कविताएँ' (1966ई.), चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ (मौलिक हिंदी कहानियाँ- 2003 ई., सिक्किम से प्रकाशित पहला हिंदी कहानी संग्रह), मौलिक हिंदी कविता संग्रह 'खुला दरवाजा और पेड़' (1995 ई.) सिक्किम से प्रकाशित पहला कविता संग्रह है।

1978ई. के 'सारिका' पत्रिका के युवा कहानीकार अंक. में सुवास दीपक की कहानी 'पड़ोसी' काफी चर्चित हुई थी।-- उनके हिंदी लेख, अनुवाद पिछले चार दशकों से सारिका, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, पहल, भाषा आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। साहित्य अकादमी पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य' में पिछले तीन दशकों से नेपाली कविताओं और कहानियों के अनुवाद छपते आ रहे हैं।

सुवास दीपक द्वारा हिंदी में 'गोरखा शिखर पुरुष श्रृंखला' के तहत अभी तक स्वाधीनता सेनानी दलबहादुर गिरी तथा अमर शहीद दुर्गा मल्ल पर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

सुवास दीपक का रचना संसार व्यापक और बहुआयामी है- उनकी कहानियाँ, उपन्यास, कविताएँ किन्हीं विशेष वादों या विचारधाराओं की दीवारों में कैद नहीं हैं। उनके रचना संसार में उत्तरोत्तर विकास हुआ है।

इसमें उनकी पूर्ववर्ती विचारधाराओं के खंडन या अस्वीकार की बात नहीं है, बल्कि उन्होंने हर क्षण के अनुभव को अपनी उत्तरजीविता से जोड़ कर मुक्त मस्तिष्क से खुद को खुल कर व्यक्त किया है। अपने लेखन की शुरुआती परिस्थिति पर उन्होंने साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार (2003 ई., नेपाली) प्राप्त करने के बाद अपने वक्तव्य में कहा था-

"लेखन क्षेत्र में मेरा प्रवेश कैसे, कब और किन परिस्थितियों में हुआ और उनके पीछे कौन से परोक्ष व प्रत्यक्ष कारण थे-यह कह पाना एक कठिन बात है और जिसका उत्तर दे पाना मेरे लिए सहज नहीं है। प्रत्येक स्रष्टा के व्यक्तित्व में अन्तर्निहित संस्कारों और आद्यबिम्बों के साथ-साथ परिस्थितियों से उत्पन्न संताप, तनाव, द्वन्द्व और स्वैरकल्पनाओं की एक शक्तिशाली भूमिका रही होती है। मेरे संस्कारों ने मुझे लिखित शब्द के प्रति अतिशय अनुराग और संवेदनशीलता प्रदान की है।"

सुवास दीपक

एस. पी. गोलाई, आरिधांग, पोस्ट बाक्स नं. 36.

गंगटोक 737101, सिक्किम